ओ•आर•सी एवं संबंधित सेवाकेन्दों की टीचर्स बहनों के साथ परम आदरणीया दादी गुल्ज़ार जी की मुलाकातः

सुप्रीम टीचर बाप ने अपनी सीट आपको दी, किसलिए? जैसे बाप ज्ञान दाता है वैसे टीचर्स भी बाप समान दूसरों को ज्ञान का दान करने वाली बाप समान ज्ञान दाता बाबा की गुरू भाई हैं। दुनियॉ में कोई भी गुरू अपनी गद्दी किसी को नहीं देता लेकिन बाबा ने अपनी सीट आपको दी तो कितना ऊॅचा भाग्य है। तो टीचर का काम है मनुष्यों का परिवर्तन कर बाप समान बनना और बनाना। तो ये याद रहता है हम बाप समान बनें। जो बाबा का काम है वही आप टीचर्स का काम है। बाबा ने आपको कितना ऊॅचा लक्ष्य दिया है यह स्मृति में रहता है? बाबा ने टीचर्स के लक्ष्ण भी बताएं हैं कि टीचर्स माना ज्ञान सुनाने में ही बाप समान नहीं लेकिन लक्ष्णों में भी बाप समान। बाबा ने हमारे में समानता रखी जो अपने बैठने की गद्दी का हम टीचर्स को हकदार बना दिया। आप तो एक या दो सेन्टर संभालती हो लेकिन प्यारा बाबा तो विश्व के सभी सेन्टर्स संभालते हैं। बाबा ने कहा है कि मेरे समान ज्ञान सुनाने वाली हो इसलिए मेरे समान हो, लेकिन ज्ञान सुनाने में ही बाप समान नहीं बनना लक्षणों में भी बाप समान बनना है, यही बाबा चाहता है। आप सभी टीचर्स के फीचर्स और चलन से सभी को फ्युचर दिखयी दे। बाबा ने कई बार मुरली में टीचर्स के लक्ष्ण सुनाएं हैं कि टीचर्स की चलन और दिनचर्या कैसी होनी चाहिए। रोज़ अपने को चेक करो कि जो बाबा हमसे चाहता है क्या वह हम कर रहे हैं। अभी रोज़ सवेरे उठकर अमृतवेले के बाद अपना सारे दिन का चार्ट बनाओ कि स्मृति, बोल और कर्म में मुझ टीचर को फॉलो फादर करना है। फिर रात्रि को चेक करो कि सारा दिन फॉलो फादर किया, स्मृति वृत्ति और दृष्टि बाप समान रही। बाबा के सारे गुण टीचर्स में दिखायी दें, अपने आपको देखो कि सिर्फ मैं ज्ञान सुनाने वाली हूॅ या गुण धारण कर गुणमूर्त बनने वाली हूॅ, क्योंकि जो भी मैं करूॅगी मुझे देख मेरे साथ रहने वाले साथी भी ज़रूर फॉलों करेंगे। तो ऐसे कर्म करो– जो भी देखे कहे टीचर को मानना पड़ेगा। तो अपने को देखो बाबा जो कहता है हम उसी प्रमाण चल रहे हैं। टीचर्स को करना ही क्या है, बाप समान बन अपने अन्दर

देवताई लक्षण दिखाने हैं। टीचर्स की ज़िम्मेवारी सिर्फ सेन्टर चलाने की ही नहीं हैं लेकिन बाप समान बनने की ज़िम्मेवारी भी बाबा ने आप सभी टीचर्स को दी है।

दादी जी के साथ प्रश्नोत्तर–

प्रश्न–दादी जी बाबा की दिल पसन्दी टीचर्स की विशेषताएं क्या होंगी?–

उत्तर–मन्सा, वाचा, कर्मणा, संबंध सम्पर्क बाबा ये सब देखते हैं कि इन सबमें बाप समान बनें हैं। ज्ञान सुनाने में अच्छी हैं लेकिन संबंध सम्पर्क में ठीक नही ंतो बाबा पसन्द नहीं करता। टीचर्स का बाप के साथ, स्वयं के साथ और जिज्ञासुओं के साथ सदा अच्छा संबंध हो यही बाबा चाहता है।

प्रश्न–दादी जी कई बहनों के अन्दर बोलने की कला अच्छी होती है लेकिन जब उनको साफ–सफाई या कोई भी स्थूल सेवा दी जाती है तो कहती हैं ये हमारा काम नही, ंतो क्या ये ब्रह्माकुमारी के लक्षण हैं?

उत्तर–यज्ञ की कोई भी सेवा छोटी नही होती, हमने दादी कुमारका को देखा सबसे पहले झाड़ू उठाकर लगाना शुरू कर देती थी, दादी जी यज्ञ की हर छोटी–बड़ी सेवा अपने हाथों से बड़े ही प्यार से बाबा की याद में करती थी और हम सभी को भी यही शिक्षा देती थी कि ब्रह्माकुमारी को सबकुछ करना आना चाहिए। दादी को हम अपनी मॉ समझते थे।

प्रश्न–दादी जी कई बहनें इतना बिज़ी रहती हैं जो अपने कमरे की या अपनी छोटी–छोटी चीजों की भी सफाई नहीं कर पाती, तो क्या ये राइट हैं?

उत्तर–अगर टीचर्स अपने कमरे या कोई भी सफाई करने में अलबेलापन करती है तो दूसरे आपसे क्या सीखेंगे। जो भी आपके कमरे में आएगा तो आपके कमरे को देखकर आपके बारें क्या सोचेगा। अगर आपका कमरा अच्छा साफ–सुथरा होंगा तो दूसरा भी सीखेंगा की हम भी अपना रूम ऐसा ही रखेंगे। स्थान की सफाई के साथ अपने मन और तन की भी सफाई रखनी है। मन में व्यर्थ चलाना यह भी किचड़ा है।

प्रश्न–दादी जी जब बहनों से समर्पण फॉर्म भराए जाते हैं तो उस समय तो कहती हैं बाबा जहॉ बिठाए, जो खिलाए, जैसे भी रखे हमें सब स्वीकार है, लेकिन जब

सेन्टर बदली करने की बात होती है तो बहनों का चेहरा उतर जाता है और कहती हैं मुझे ही क्यों भेजते हो फलानि बहन को भेजो, तो क्या ये ठीक है?

उत्तर–हमें अचानक ही बाबा बोलता था कि तुम्हें फलानि जगह जाना है हम बाबा को कभी मना नहीं करते थे। एक बार बाबा ने कहा बच्ची तुम्हें लखनऊ जाना है, हमने कहा बाबा हम तो लखनऊ का ल शब्द भी नहीं जानते तो कैसे जाएंगे, लेकिन हमने मना नही किया, बाबा ने कहा बच्ची अन्धों ने मुल्तान ढूँढ लिया तुम तो त्रिनेत्री हो क्या लखनऊ नहीं ढूँढ़ सकती। तो हम लखनऊ गए। बाबा कहते थे बच्चे बहती गंगा बनना है तालाब नहीं।

प्रश्न–दादी जी सेवा के क्षेत्र में किसी को चान्स मिलता है किसी को नहीं, कई बार एक का ही रिपीट होता रहता है उस समय अवस्था कैसी रहे?

उत्तर–उस समय सोचें इसमें कोई न कोई विशेषता है जो बार–बार इसी को चान्स मिल रहा है इसमें मायूस नही होना चाहिए।

प्रश्न–दादी जी कभी–कभी संगठन में छोटी–छोटी बातें हो जाती है लेकिन कई दूसरों के सामने वर्णन करके वायुमण्ड़ल खराब कर देते हैं, क्या ये सही है?

उत्तर–मानो दो या तीन को बोला तो वायुमण्ड़ल में वायब्रेशन फैलता है तो वो भी रॉग है, जैसे योग में शान्ति के वायब्रेशन हम पूरे विश्व में फैलाते हैं, वैसे व्यर्थ बातों का वर्णन करने से भी वायब्रेशन चारों और फैलता है। हमारी दिनचर्या में कोई भी विघ्न आता था तो बाबा कहता था आपका योग ठीक नही, हर एक लक्ष्य रखे मुझे अच्छा बनना है, मुझे आगे बढ़ना है।

प्रश्न–दादी जी क्या भाषण करने वाले ही बड़ों के नजदीक जा सकते हैं, स्थूल सेवा करने वाले नहीं?

उत्तर–भोली दादी से मिलने बाबा रोज़ जाता था, जो हमेशा भण्ड़ारे में होती थी, जो हर प्रकार की सेवा करता है उसे फायदा होता है, सच्चे दिल से सेवा करने वाले ही आगे जाते हैं। योग में रहकर एक दो को दिल का प्यार दो और लो।

प्रश्न–दादी जी सेन्टर का बड़े सेन्टर व साथी सेन्टर के साथ संबंध कैसा हो?

उत्तर–जैसे बाबा के साथ संबंध व प्यार है वैसे हर सेन्टर से प्यार हो क्योंकि सभी सेन्टर बाबा के हैं, घर में जैसे छोटे भाई से प्यार होता है वैसे छोटे सेन्टर को भी छोटे भाई की तरह देखो तो प्यार बढ़ेगा।

प्रश्न–दादी जी जब कोई बड़ा प्रोग्राम होता है तो भाषण करने वाली बहन की तो महिमा होती है और खाना बनाने वाली की नही, तो स्थूल सेवा करने वाली बहन के संकल्प चलते हैं, क्या ये होना चाहिए?

उत्तर–जिनकी महिमा होती है उनका यहॉ ही खत्म हो जाता है, जिनको कोई नही देखता उनको ऊपर वाला देखता है।

ओम् शान्ति